

सम्पादकीय

गुरुवाणी की प्रासंगिकता:आध्यात्मिक

विरासत से अकादमिक शोध तक की यात्रा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं रही है, बल्कि उसने दर्शन, साहित्य, योग, नैतिकता और जीवन—पद्धति के अनेक प्रश्नों पर विचार की समृद्ध परंपरा विकसित की है। गुरु—शिष्य परंपरा इसी विरासत का महत्वपूर्ण आधार रही है। इसी संदर्भ में गुरु महाराज श्री श्री 1008 श्री राजाराम जी महाराज की गुरुवाणी को लेकर उनके अनुयायियों द्वारा यह विचार सामने रखा जा रहा है कि उसमें कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग और सांख्य दर्शन जैसे भारतीय दार्शनिक तत्वों की व्याख्या मिलती है तथा आधुनिक समय में इसके अकादमिक अध्ययन की संभावनाएं तलाश की जानी चाहिए। ऐसे विषयों पर चर्चा करते समय आस्था और अकादमिक शोध दोनों के क्षेत्र को स्पष्ट रूप से समझना आवश्यक है। किसी आध्यात्मिक परंपरा का धार्मिक महत्व अपने स्थान पर है और उसके ऐतिहासिक, भाषाई, दार्शनिक तथा सामाजिक प्रभाव का विश्वविद्यालयीय अध्ययन अपने स्थान पर। दोनों को एक—दूसरे का विरोधी मानने के बजाय प्रमाण, संदर्भ और शोध—पद्धति के साथ आगे बढ़ाया जा सकता है। गुरुवाणी और भारतीय दार्शनिक परंपरा भगवद्गीता में कर्म, ज्ञान और भक्ति के विभिन्न मार्गों का विस्तृत दार्शनिक विवेचन मिलता है। भारतीय दर्शन में सांख्य और योग की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यदि गुरुवाणी में इन अवधारणाओं को मारवाड़ी भाषा और स्थानीय सामाजिक संदर्भों के माध्यम से समझाया गया है, तो यह भाषाई और दार्शनिक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण विषय हो सकता है। मारवाड़ी जैसी लोकभाषाओं में व्यक्त आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि भाषा—विकास, लोक—संस्कृति, सामाजिक इतिहास और दर्शन के दृष्टिकोण से भी किया जा सकता है। इसके लिए गुरुवाणी के उपलब्ध मूल पाठों का संकलन, प्रामाणिक संस्करण तैयार करना, भाषाशास्त्रीय विश्लेषण और भारतीय दर्शन के मूल ग्रंथों से तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक होगा। यही प्रक्रिया किसी परंपरा को व्यापक अकादमिक विमर्श तक ले जाने का आधार बन सकती है। आस्था और प्रमाण के बीच संतुलन आवश्यक गुरु महाराज से जुड़े अनुयायियों के बीच अनेक आध्यात्मिक प्रसंग और चमत्कारिक घटनाओं की मान्यता रही है। शिकारपुरा के तालाब और पत्थर की नाव से संबंधित प्रसंग भी इसी परंपरा का हिस्सा बताया जाता है। अनुयायियों के अनुसार यह घटना लगभग एक शताब्दी पूर्व की है और इसे गुरु की योग—सिद्धि से जोड़कर देखा जाता है। ऐसे दावों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व हो सकता है, लेकिन यदि इन्हें वैज्ञानिक शोध का विषय बनाया जाना है, तो शोध की कसौटियां अलग होंगी। उपलब्ध दस्तावेज, प्रत्यक्षदर्शियों के विवरण, पुराने अभिलेख, स्थानीय इतिहास, भौतिक संरचनाएं, तस्वीरें सरकारी या संस्थानगत रिकॉर्ड तथा अन्य प्रमाणों का व्यवस्थित परीक्षण करना होगा। वैज्ञानिक शोध किसी आस्था को खारिज करने के लिए नहीं, बल्कि उपलब्ध तथ्यों को समझने के लिए किया जाता है। इसलिए किसी आध्यात्मिक घटना को पहले से सिद्ध या अस्िद्ध घोषित करने के बजाय उसने शोध के प्रश्न के रूप में प्रस्तुत करना अधिक उचित होगा। रामसेतु और मीरा परंपरा, इतिहास और शोध भारतीय सांस्कृतिक स्मृति में रामसेतु और भक्तिमति मीराबाई से जुड़े प्रसंगों का विशेष स्थान है। रामसेतु का उल्लेख भारतीय धार्मिक परंपरा में रामायण से जुड़ा हुआ है, जबकि मीराबाई का जीवन कृष्णभक्ति की महान परंपरा का महत्वपूर्ण अध्ययन है। इन प्रसंगों के धार्मिक और साहित्यिक महत्व पर व्यापक अध्ययन हुआ है। हालांकि इनके संबंध में धार्मिक परंपरा, ऐतिहासिक स्रोत और आधुनिक वैज्ञानिक व्याख्या को अलग—अलग श्रेणियों में रखना जरूरी है। मीराबाई के कृ ण में विलीन होने का प्रसंग भक्तिकाव्य और लोकपरंपरा में अत्यंत प्रसिद्ध है। किंतु किसी ऐतिहासिक घटना के स्वरूप और उसके आध्यात्मिक अर्थ को स्थापित करने के लिए प्राथमिक स्रोतों और ऐतिहासिक प्रमाणों का अध्ययन आवश्यक है। इसी प्रकार रामसेतु को लेकर धार्मिक मान्यताओं और भूवैज्ञानिक अध्ययन को अलग—अलग संदर्भों में समझना चाहिए। इससे आस्था का सम्मान भी बना रहता है और शोध की विश्वसनीयता भी। विश्वविद्यालयों में शोध की संभावनाएं गुरुवाणी के अध्ययन के लिए विश्वविद्यालयों में कई विषयों पर शोध की संभावनाएं हो सकती हैं। मारवाड़ी भाषा में उपलब्ध साहित्य का दस्तावेजीकरण, गुरुवाणी की शब्दावली, उसमें निहित नैतिक एवं दार्शनिक विचार, कर्म और कर्तव्य की अवधारणा, भक्ति और आत्मानुशासन, योग संबंधी विचार तथा लोकसमाज पर उसके प्रभाव जैसे विषय शोध के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

LPU हिंसा:छात्रों के सवाल पर राजनीति की आवाज क्यों बदल जाती है?

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com पंजाब के फगवाड़ा स्थित लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (LPU) में 27 सितंबर को छात्र विरोध के हिंसक



रूप लेने की घटना ने विश्वविद्यालयों में छात्र सुरक्षा, प्रशासनिक पारदर्शिता, सोशल मीडिया पर फैलती अपुष्ट सूचनाओं और राजनीतिक दलों की प्रतिक्रियाओं को लेकर कई गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, एक छात्रा के साथ कथित यौन अपराध से संबंधित सोशल मीडिया संदेश के बाद विरोध शुरू हुआ। बाद में परिसर में तोड़फोड़, आगजनी और जालंधर—फगवाड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग के अवरुद्ध होने की घटनाएं सामने आईं। पुलिस ने मामले में प्राथमिकी दर्ज कर विशेष जांच दल (SIT) गठित किया है। कथित

और प्रशासन, दोनों की जिम्मेदारी है कि वे जांच पूरी होने से पहले किसी निष्कर्ष को अंतिम सत्य के रूप में प्रस्तुत न करें। छात्र असंतोष को केवल कानून—व्यवस्था के चश्मे से नहीं देखा जा सकता किसी विश्वविद्यालय में छात्र सुरक्षा, हॉस्टल व्यवस्था या प्रशासनिक जवाबदेही को लेकर सवाल उठाना लोकतांत्रिक हुआ। बाद में परिसर में तोड़फोड़, आगजनी और जालंधर—फगवाड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग के अवरुद्ध होने की घटनाएं सामने आईं। पुलिस ने मामले में प्राथमिकी दर्ज कर विशेष जांच दल (SIT) गठित किया है। कथित

रूढ़िवादी सामाजिक परिपाटियां: कर्मयोगियों की उन्नति में बाधा कब तक?

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com समाज की पहचान उसकी परंपराओं, संस्कारों और आपसी रिश्तों से होती है। परिवार के सुख—दुख में सहभागी बनना, किसी के निधन पर शोकाकुल परिजनों को सांत्वना देना और पारिवारिक आयोजनों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना हमारी सामाजिक संस्कृति के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। ये परंपराएं लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं और सामूहिकता की भावना को मजबूत करती हैं। लेकिन जब यही परंपराएं समय, परिस्थितियों और व्यक्ति की आर्थिक क्षमता को समझे बिना अनिवार्य सामाजिक दायित्व बन जाती हैं, तब उनके औचित्य पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। आज का समाज पहले की तुलना में काफी बदल चुका है। रोजगार, व्यापार, शिक्षा और बेहतर अवसरों की तलाश में लाखों लोग अपने पैतृक गांवों और शहरों से दूर

देश के विभिन्न हिस्सों में रह रहे हैं। किसी की कर्मभूमि जन्मभूमि से दो हजार किलोमीटर दूर है, तो कोई विदेश में अपना व्यवसाय या नौकरी कर रहा है। ऐसे में दशकों पुरानी सामाजिक व्यवस्थाओं को बिना किसी बदलाव के निभाने की अपेक्षा करना क्या व्यावहारिक है? यह प्रश्न केवल किसी एक परिवार का नहीं, बल्कि बदलते सामाजिक ढांचे का है। परंपराएं लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ती हैं और सामूहिकता की भावना को मजबूत करती हैं। लेकिन जब यही परंपराएं समय, परिस्थितियों और व्यक्ति की आर्थिक क्षमता को समझे बिना अनिवार्य सामाजिक दायित्व बन जाती हैं, तब उनके औचित्य पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। आज का समाज पहले की तुलना में काफी बदल चुका है। रोजगार, व्यापार, शिक्षा और बेहतर अवसरों की तलाश में लाखों लोग अपने पैतृक गांवों और शहरों से दूर

क्या उसे असंवेदनशील या रिश्तों के प्रति उदासीन मान लेना उचित है? रिश्तों की मजबूती का आकलन केवल शारीरिक उपस्थिति से नहीं होना चाहिए। परिस्थितियों को समझना, जरूरत के समय सहायता करना और भावनात्मक रूप से साथ देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कर्मभूमि की जिम्मेदारियां भी कम महत्वपूर्ण नहीं आज अनेक लोग वर्षों की मेहनत से अपना व्यवसाय स्थापित करते हैं। कोई दुकान चलाता है, कोई कारखाना संभालता है, कोई संस्था संचालित करता है और कोई दर्जनों कर्मचारियों के रोजगार की जिम्मेदारी उठाता है। ऐसे व्यक्ति के लिए कई दिनों तक कार्यथल से दूर रहना केवल व्यक्तिगत समय का नुकसान नहीं होता, बल्कि उसके व्यवसाय, कर्मचारियों और ग्राहकों पर भी प्रभाव डाल सकता है। यदि किसी पारिवारिक आयोजन में शामिल होने के लिए यात्रा, ठहरने और अन्य

व्यवस्थाओं पर बड़ी राशि खर्च हो तथा बार—बार अनुपस्थिति के कारण व्यवसाय प्रभावित हो, तो इसका असर पूरे परिवार की आर्थिक स्थिति पर पड़ सकता है। विशेष रूप से छोटे व्यापारियों और स्वरोजगार करने वालों के लिए यह समस्या अधिक गंभीर हो सकती है। उनके पास हमेशा ऐसा विश्वसनीय विकल्प उपलब्ध नहीं होता, जिसके भरोसे वे कई दिनों तक अपना काम छोड़ सकें। ऐसी परिस्थितियों में सामाजिक दायित्वों और व्यावसायिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। जन्मभूमि के प्रति लगाव और कर्मभूमि के प्रति जिम्मेदारी एक—दूसरे के विरोधी नहीं हैं। दोनों जीवन के महत्वपूर्ण आधार हैं। रस्मों का दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ कई बार समस्या परंपरा निभाने में नहीं, बल्कि उसे निभाने के तरीके और उससे जुड़ी अपेक्षाओं में होती है। किसी कार्यक्रम

में शामिल होने के बाद भी यदि व्यक्ति को यह सुनना पड़े कि वह समय पर नहीं आया, पर्याप्त समय नहीं दिया या अपेक्षा के अनुरूप सामग्री लेकर नहीं पहुंचा, तो आत्मीयता का स्थान धीरे—धीरे औपचारिकता और असंतोष लेने लगता है। किसी के दुख में सहभागी बनने का उद्देश्य उसे भावनात्मक सहारा देना है, न कि उसकी सामाजिक उपस्थिति, खर्च या उपहार का मूल्यांकन करना। यदि रिश्तों में सम्मान की कसौटी यात्रा करने की क्षमता, खर्च की गई राशि अथवा रस्मों के पालन तक सीमित हो जाए, तो परंपराओं के मूल उद्देश्य पर पुनर्विचार करना चाहिए। सामाजिक व्यवहार में संवेदनशीलता दोनों तरफ से आवश्यक है। जिस व्यक्ति से आने की अपेक्षा की जा रही है, उसकी परिस्थितियों को भी उतना ही महत्व मिलना चाहिए जितना आয়োजन करने वाले परिवार की भावनाओं को। क्या सामाजिक

व्यवस्थाओं का सरलीकरण संभव है? समय के साथ सामाजिक व्यवस्थाओं में बदलाव कोई नई बात नहीं है। समाज की अनेक परंपराएं अलग—अलग कालखंडों में परिस्थितियों के अनुसार बदली हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि परिवार और समाज मिलकर ऐसी व्यवस्थाएं विकसित करें, जिनमें मानवीय संवेदनाओं की रक्षा भी हो और अनावश्यक आर्थिक बोझ भी न बड़े। दूर रहने वाले रिश्तेदारों के लिए हर अवसर पर तत्काल पहुंचना संभव नहीं हो, तो फोन, वीडियो कॉल या अन्य माध्यमों से संवेदना व्यक्त करने को भी सम्मान दिया जा सकता है। जहां निकट उपस्थिति आवश्यक हो, वहां प्राथमिकता के आधार पर पहुंचने का प्रयास किया जाए। पारिवारिक बैठकों में पहले से तय किया जा सकता है कि कौन—सी रस्में आवश्यक हैं और किनका सरल विकल्प अपनाया जा सकता है।

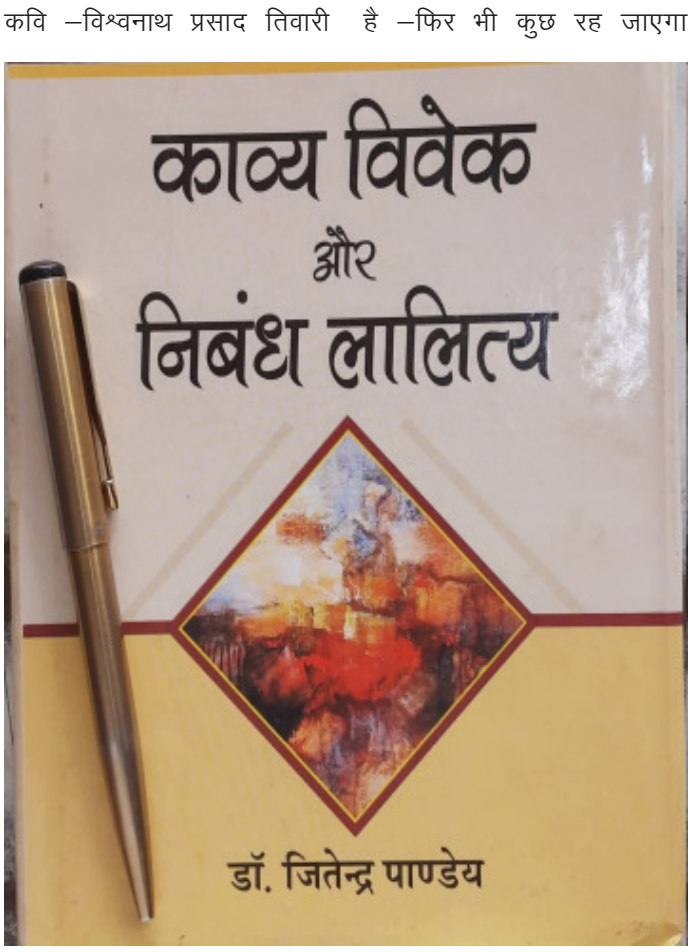
मेरी दृष्टि में – काव्य विवेक और निबंध लालित्य

साहित्य सदैव समाज को विखरने से बचाता है। जो समाज में विखराव उत्पन्न करें वह र्शाहित्यश् कदापि नहीं हो सकता। साहित्य का शाब्दिक अर्थ है षजिसमें सबका हित होष। र्शसबकाश् से सिर्फ मानव मात्र ही नहीं अपितु जो संपूर्ण ब्रह्मांड के हित की बात करें वही साहित्य है। साहित्य के मूल रूप से तीन उद्देश्य हैं— लोकमंगल, लोकरक्षण व लोकरंजन। इन्हीं उद्देश्यों से अनुप्राणित साहित्य ही लोक के साथ अनंत काल तक यात्रा करता है। काव्य विवेक और निबंध लालित्यः साहित्यकार डॉ० जितेंद्र पांडेय जी की बीस समीक्षाओं व अट्ठारह निबंधों से संकलित एक विशिष्ट पुस्तक है। पुस्तक का विस्तार कबीर दास से लेकर समकालीन कवियों तक फैला है। डॉ० जितेंद्र पांडेय जी का विचार मंथन चयनित कवियों व उनकी कविताओं तथा उनके काव्य धर्म पर केंद्रित है। जिस प्रकार धरती पर विचरण करने वाला व्यक्ति भूगर्भ में छिपे खनिजों व जल स्रोतों से

अनभिज्ञ होता है किंतु जब आधुनिक कैमरे की आँखों से देखता है तो भूगर्भ में छिपी सारी वस्तुएं दृश्यमान हो उठती हैं। ठीक उसी प्रकार डॉ० जितेंद्र पांडेय जी ने चयनित कवियों तथा उनके काव्य धर्म व उनकी कविताओं की व्यापकता को गहराई से निरूपित किया है। जिसे पढ़कर पाठक गण कवियों के चिंतन व कविता की व्यापकता के केंद्र तक पहुंच सकते हैं। इस पुस्तक में साहित्यकार डॉ० जितेंद्र पांडेय जी ने प्रथम शीर्षक के रूप में कबीर दास को चुना है और शीर्षक का नाम दिया ष्कबीर का स्वाधीन विवेक यह सर्वविदित है कि कबीर दास जी निर्गुण भक्ति शाखा के क्रांतिकारी कवि थे। उन्होंने जाति—पाति, भेद—भाव, धार्मिक—कट्टरता, अंधविश्वास, आडंबर व पाखंड पर अपनी बेबाक लेखनी चलाई है। उनका आत्मविश्वास व लेखन कभी पराधीन नहीं रहा। कबीर दास जी ने अपने स्वतंत्र विवेक से समाज में फैली कुुरीतियों पर कुठाराघात किया

है। डॉ० जितेंद्र पांडेय जी ने कबीर के तमाम दोहों व अपने तर्कों द्वारा इस बात की पुष्ट करते हैं कि कबीर दास का स्वाधीन विवेक कितना प्रबल और क्रांतिकारी था। इसी क्रम में डॉ० जितेंद्र पांडेय जी ने गोस्वामी तुलसीदास पर एक पुष्ट समीक्षा तुलसीदास एक युग प्रवर्तक शीर्षक से प्रस्तुत किया है। समीक्षा पढ़ने पर हम तुलसीदास को एक युग परिवर्तक के रूप में स्वीकार करने पर विवश हो जाते हैं। तीसरे अध्याय में विश्व का विख्यात महाकाव्य रामचरितमानस पर भ्मानस का राजधर्म शीर्षक से डॉ० जितेंद्र जी ने जोरदार लेखनी चलाई है। मानस की अनेकों चौपाइयों व दोहों की व्यापक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए मानस के राजधर्म को निरूपित किया है। जो हमें ज्ञान के साथ—साथ आनन्दानुभूति प्रदान करता है। ष्सतसई की मूल प्रवृत्तिः डॉ० जितेंद्र पांडेय जी की चौथी समीक्षा है। शृंगार रस के शीर्ष कवि बिहारी लाल द्वारा रचित पुस्तक बिहारी सतसई को खंगाल कर बिहारी

सतसई की जड़ तक पहुंचने का सुंदर प्रयास ही नहीं किया है अपितु पहुंचा भी है। इसी शृंखला में लेखक ने भ्रेम की पीर के कवि घनानंदः पर अपनी बेबाक लेखनी चलाई है। इसमें उन्होंने घनानंद की अड़तीस प्रकाशित पुस्तकों का जिक्र व अनेक छंदों का व्यापक विशेषण किया है। जो लेखक की विद्वता का प्रमाण है। अगले अध्याय में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की बहुआयामी कविता शीर्षक में विभिन्न कविताओं को व्याख्याित किया है। तदोपरंत अगले अध्याय में सर्वोत्कृष्ट गीत काव्य है— सरोज स्मृति नामक शीर्षक में लेखक ने अपनी समीक्षात्मक प्रतिभा का व्यापक नमूना प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार डॉं जितेन्द्र पांडेय जी ने— राष्ट्रीय चेतना के ओजस्वी गायक— रामधारी सिंह दिनकर कविता का व्यक्ति स्वातंत्र्य—अज्ञेय जनमानस की कविता—नागार्जुन बहुस्याम में निरूपित होती कविताएं बेकसूर आदमी का हालफनामा— धूमिल बेहतर दुनिया की चिंता के



कविता में जीवन—विश्वनाथ प्रसाद तिवारी नेति—नेति का विराट दर्शन संशयात्मा में निरूपित सभ्यता का की श्यामलता शोभनाथ यादव की

कविता में सौंदर्य और संघर्ष का नया प्रयोग आवाँ विमर्श— एक विश्लेषण बवंडर में व्यक्त आक्रोश— श्री भगवान तिवारी व कविता के सरोकार जैसे शीर्षकों की समीक्षाएं प्रस्तुत की है जो पुस्तक को विशिष्ट बनाती है। अगले खंड में ललित निबंधों का विशाल संकलन है। निबंध गद्य साहित्य की एक उत्कृष्ट विधा है। इसमें लेखक किसी विशेष विषय पर अपना व्यापक विचार प्रस्तुत करता है। निबंध के कई प्रकार होते हैं’ जैसे—वर्णनात्मक निबंध, विवरणात्मक निबंध, तार्किक निबंध, आलोचनात्मक निबंध व ललित निबंध। इस पुस्तक के निबंध खंड में डॉ० जितेंद्र पांडेय जी ने अपने अट्ठारह ललित निबंधों को शामिल किया है। ललित निबंध का मूल उद्देश्य पाठक को ज्ञान के साथ—साथ आनंद तथा उपयुक्त विषय पर चिंतन करने के लिए प्रेरणा प्रदान करना होता है। पुस्तक के सभी निबंधों के शीर्षक नवीनता को धारण किए हुए हैं। कई निबंध हमें

समाज, साहित्य, अध्यात्म, शिक्षा, देश, सदी, स्वतंत्रता, यज्ञ, वेद, खेल व कृषि से जोड़ते हैं, तो कई निबंध हमें चिंतन करने पर विवश कर देते हैं। जिसमें क्रोध पाप का मूल मौत पर फतह भारत— कल और आज आतंकवाद —जिम्मेदार कौन अराजकता की देन है आतंकवाद चरमराती शहरी सुविधाएं हैं पुस्तक के अंत में दो निबंध संगीतकार— रविंद्र जैन व अन्ना हजारे का जन आंदोलन शीर्षक में भारत के दो महानायकों का व्यापक उल्लेख किया गया है। कुल मिलाकर डॉ० जितेंद्र पांडेय जी द्वारा लिखी गई समीक्षाओं व निबंधों से सुसज्जित काव्य विवेक और निबंध ललित पुस्तक विशिष्ट है। इस पुस्तक में शोधार्थियों के लिए व्यापक सामग्री विद्यमान है, तथा सामान्य पाठकों को आनंद व ज्ञान के झर—झर झर रहे जलप्रपातों में स्नान करने जैसा है। —लालबहादुर चौरसिया शलाल (महामंत्री— विश्व हिंदी शोध एवं संवर्धन अकादमी आजमगढ़ इकाई)

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi" Plaza", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130. PRGI NO.: KNHN/26/A5540 E-Mail: news@bhaaratarth.com. Website: bhaaratarth.com. Established: 2026